मुअ़ल्लिफ़
डा० आज़म बेग क़ादरी सफ़वी

वसीला वाजिब है

मुअ़ल्लिफ़

डॉ०–आज़म बेग क़ादरी सफ़वी

09897626182

नाम किताब–**वसीला वाजिब है**

मुअ़ल्लिफ़–**डा० आज़म बेग क़ादरी सफ़वी**

सने इशाअ़त–जनवरी– **2020**

कम्पोज़िंग–**जुनैद अ़ली सफ़वी &**
ज़ैनुल आ़बदीन सफ़वी

नाशिर– **सइयद ज़हीरउद्दीन साहब**

क़ीमत– **30/-** रूपये

–: मिलने के पते :–

मदार बुक डिपो
मकनपुर (कानपुर)
09695661767

जावेद बुक सेलर
करहल (मैनपुरी)
09634447000

अनवार उर्दू बुक डिपो
बिसात खाना मैनपुरी
09319086703

उर्दू बुक हाउस
तलाक महल (कानपुर)
09389837386,09559032415

-: फ़ेहरिस्त मज़ामीन :-

न०शुमार सफ़हा

न०शुमार सफ़हा

न०शुमार सफ़हा

786/92

अल्ह़म्दु लिल्लाहि नह़्मदुहू व नस्तई़नुहू व नस्तग़फ़िरुहु वनुअ़मिनू बिही व नतावक्कलू अ़लैहि व नाऊजू बिल्लाहि मिन शुरुरि अ़न फुसिना वमिन सइयेआति आअ़मलिना मंई युदलिलहु फ़ला हादियालहू वनशहदु अन्ना मुह़म्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुहू ०

तमाम खूबियाँ और तारीफ़ें सिर्फ़ अल्लाह तअ़ाला के लिये हैं जो तमाम कायनात का एक अकेला मालिक व ख़ालिक़ है जिसने अपनी रह़मत व मेहरबानी की चादर से अपने बन्दों को ढाँप रखा है जिसने कायनात की तख़लीक़ व तरतीब को हुस्नो जमाल बख़्शा जो दिलो के पोशीदा राज़ो पर मुत्तलाअ़ है जो तमाम ह़िकमतों व ग़ैबों का जानने वाला है कायनात का कोई ऐसा ज़र्रा नहीं जो उसकी ह़म्दो सना न करता हो हर शैः उसके ताबेअ़ व क़ब्ज़े कुदरत में है जो अपनी बढ़ाई और बुलन्दी में यकता है

उसका कोई शरीक नहीं जो नेअ़मतें व रिज़्क़ अ़ता करने वाला, हिदायत देने वाला, हिफ़ाज़त करने वाला, बड़ा बख़्शने वाला निहायत मेहरबान व करीम है और दुरूदो सलाम हो रहमते दो अ़ालम सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम पर जो ज़ाहिर व बातिन में तइयब व ताहिर हैं जो तमाम ऐ़बो नक़ाइस से पाक उ़लूमे ग़ैब के जानने वाले हैं जिन्हें अल्लाह तअ़ाला ने नूर व हिदायत के साथ मबऊ़स फ़रमाया जिनके नूर से दो अ़ालम में उजाला है अल्लाह तअ़ाला ने जिन्हें कौसर अ़ता की जिस पर रोज़े क़यामत प्यासे मोमिन आयेंगे और सैराब होकर जायेंगे जिन्होंने इन्सान को गुमराहियों के अंधेरों से निकालकर राहे हिदायत और राहे निजात दिखाई अल्लाह तअ़ाला ने अपने हबीब को

औसाफ़ व अख़लाक़ में बुलन्द और बे मिस्ल और तमाम अम्बिया-किराम अलैहिमुस्सलाम का सरदार बनाया और अपने नूर से हुजूरे पाक के जिस्मे अत्हर को तख़लीक़ किया जिनका ज़ाहिर व बातिन सब नूर है।

और रहमत व सलामती हो आपके अहले बैत अत्हार पर जो दीन की हिफ़ाज़त और बक़ा के लिये कुरबान हो गये जो रोज़े क़यामत मुहिब्बाने अहले बैत की निजात का ज़रिया होंगे और हर आफ़त व मसाइब के दरमियान ढ़ाल होंगे और रहमत व सलामती हो आपकी अज़वाजे मुतह्हरात और आपकी आल व असहाव और तमाम औलिया-ए-किराम व सूफ़िया-ए-इज़ाम पर और उन पर जो अल्लाह तआला के मुक़र्रब व मख़सूस बन्दे हैं।

ताअस्सुरात

हज़रत शेख़े तरीक़त रहबरे शरीअ़त हज़रत शाह सूफ़ी सय्यद मुहम्मद ऐजाज़ हाशमी मक्की कलन्दरी साहब क़िब्ला सज्जादा नशीन आस्ताना-ए-आ़लिया हज़रत बू अ़ली शाह कलन्दर पानीपत-हरियाणा (इण्डिया)

इस नाजुक दौर में जहाँ लोग दुनियाँ की ताअ़लीम में गुम होकर बुर्जुगों से दूर हुये और मुन्किरीने वसीला हुये ऐसे पुर फ़ितन दौर में अल्लाह तबारक व तआ़ला का एहसान है कि जनाब डा० आ़जम बेग क़ादरी सफ़वी साहब ने मुन्किरीने वसीला की इस्लाह के लिये ''वसीला वाजिब है'' इस मौज़ूअ़ पर एक नायाब किताब तहरीर फ़रमाई है कसीर मसरुफ़ियात के बावजूद इस किताब का मुताअ़ला किया मज़ीद मैंने अपना मदरसा ''अ़रबिया सिराजिया कलन्दरिया ऐजाज़ुल उ़लूम'' के सदर मुदर्रिस हज़रत मौलाना मुफ़्ती रियाज़ अहमद साहब के हवाले इस किताब को किया ताकि वो नज़रे सानी करें उन्होंने मुताअ़ले के बाद इस किताब की बहुत ताअ़रीफ़ की जिसको सुनकर मेरा दिल बाग़-बाग़ हो गया और मैंने उन से कहा कि अपना इदारा जो कि हरियाणा में तब्लीग़ो सुन्नियत का अ़ज़ीम मरकज़ी इदारा है उसके शोबऐ दरसे निज़ामी में मुताअ़ले के लिये इस किताब को निसाब में शामिल कर दें

अल्लाह तबारक व तआ़ला डा० साहब को दारैन की सआ़दतों से मुस्तफ़ीज़ फ़रमाऐ और इस किताब को लोगों की हिदायत का ज़रिया बनाये।

फ़क़ीर-

सय्यद मुहम्मद ऐजाज़ हाशमी मक्की कलन्दरी सज्जादा नशीन आस्ताना-ए -आ़लिया हज़रत बू अ़ली शाह कलन्दर पानीपत हरियाणा (इण्डिया)

-: तम्हीद :-

अल्लाह तबारक व तआ़ला का लाख-लाख शुक्र और एहसान है कि जिसकी तौफ़ीक़ से मैं इस किताब ''वसीला वाजिब है'' की तालीफ़ कर रहा हूँ बाज़ लोग अपनी कम इ़ल्मी और बे हिकमती के सबब ये कहते हैं कि अपनी हाजत व मदद और दुआ़ को अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की बारगाह में बग़ैर वसीले के बराहे रास्त पेश करना चाहिये और अपनी दुआ़ में किसी अम्बिया व औलिया और नेक सालिहीन को वसीला नहीं बनाना चाहिये यानी अल्लाह तआ़ला से अपनी हाजत बराहे रास्त तलब करना चाहिये और सिर्फ़ उसी से मदद और अपनी दुआ़ की मक़बूलियत का सवाल करना चाहिये।

हालांकि ऐसा बातिल अ़क़ीदा महज़ गुमराही और बाइसे हलाकत है क्योंकि ईमान की इब्तिदा और बुनियाद नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) की रिसालत पर ईमान लाना और सिद्क़ दिल से तसलीम करना है फिर उसके बाद अल्लाह की तौहीद पर ईमान लाना और सिद्क़ दिल से अल्लाह की बहदानियत का इक़रार करना है इसी तरह पहले हदीस पर ईमान लाना ओर सिद्क़ दिल से तसलीम करना फिर उसके बाद कुरान पर ईमान लाना और उसे सिद्क़ दिल से तसलीम करना कि ये अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त का कलाम है क्योंकि नबी पाक (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने हमें बतलाया कि ये कुरान है तो हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) का ये ख़बर देना कि ये कुरान है तो हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) का हर क़ौल हदीस होता है तो हमें हदीस पहले मिली और हदीस के ज़रिये हमने अल्लाह के कुरान को जाना यानी हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) के क़ौल (हदीस) के तवस्सुल से हमें कुरान का इदराक हुआ फिर हुजूर-

(सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने हमें बतलाया कि– अल्लाह एक है जो सारी कायनात को पैदा करने वाला और उसे अरास्ता करने वाला और उसके निज़ाम को चलाने वाला है और हर चीज़ उसके ताबेअ़ और इहाते में है और हर चीज़ उसके क़ब्ज़े कुदरत में है और तमाम इ़बादात सिर्फ़ अल्लाह के लिये हैं और नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात, व अमलियात और अहकामे शरीअ़त में तमाम उमूर व मसाइल और क़ब्र व क़यामत और जन्नत व दोजख़ यानी कुल दीन इस्लाम हमें हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) के ज़रिये और वसीले से मिला तो हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) के तवस्सुल से ही हमें इन बातों का इ़ल्म हुआ और हमने इन्हें माना और दिल से तसलीम किया अगर नबी पाक (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्ल्म) हमें इन बातों का इ़ल्म न देते तो हमें इन बातों का इ़ल्म न होता।

हालांकि अल्लाह तबारक व तआ़ाला अगर चाहता तो दीन इस्लाम के अहकामात और कुरान और दीनी इ़ल्म व मसाइल बराहे रास्त हम तक पहुँचा सकता था क्योंकि अल्लाह तबारक व तआ़ाला हर शैः पर क़ादिर है और हर चीज़ उसके क़ब्ज़े कुदरत में है मगर अल्लाह तबारक व तआ़ाला ने अपने महबूब सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) को ज़रिया और वसीला बनाया तो हम आज हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) के वसीले के बग़ैर अल्लाह तआ़ाला से अपनी हाजत का बराहे रास्त मुतालबा कैसे कर सकते हैं क्योंकि अल्लाह तआ़ाला किसी बन्दे से हम कलाम नहीं होता और न ही अल्लाह के इ़ज़्न और उसकी तौफ़ीक़ के बग़ैर किसी बन्दे में ये ताक़त व कुव्वत और कुदरत है कि वो अल्लाह से हम कलाम हो सके और अल्लाह की माअ़रिफ़त व रसाई और अल्लाह की बारगाह में दुआ़ की मकबूलियत नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) के वसीले के बग़ैर ना मुम्किन है।

और कायनाते ख़ल्क़ की हर शैः का इदराक बग़ैर तवस्सुल व ज़राये के मुम्किन नहीं है तो बराहे रास्त अल्लाह तबारक व तआ़ला की रसाई का इदराक कैसे मुम्किन हो सकता है दीन इस्लाम के तमाम शरई अहकामात व मसाइल और अवामिर व नवाही और फ़राइज़ व नवाफ़िल और अमलियात सब हमें सरकारे दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) के ज़रिये और तवस्सुल से मिले हैं और इन पर अ़मल करने का तरीक़ा भी हमें हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) से ही मिला है तो वाज़ेह हुआ कि हर चीज़ के इदराक के लिये ज़रिया और वसीला वाजिब है अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने महबूब के सद्क़े व तुफ़ैल इस तालीफ़ को अपनी मुक़द्दस बारगाह में शरफ़े मक़बूलियत अ़ता फ़रमाये और इस किताब को उ़म्मते मुस्लिमा की इस्लाह का ज़रिया बनाये। –आमीन

फ़क़ीर

डा० आज़म बेग क़ादरी सफ़वी

09897626182

09045442223

786 / 92

-: कुरान से इस्तिदलाल :-
(वसीला)

या अइयुहल लज़ीना आमनुत्तकुल्लाहा वब्तग़ू इलैहिल वसीला

(ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरते रहो और उस (के हुज़ूर) तक (नज़दीकी और रसाई का) वसीला तलाश करो।
(सू०-मायदा-35)

बाज़ लोग कहते हैं कि बराहे रास्त (सीधे) अल्लाह तआ़ला से माँगो मगर क्या कभी किसी को बग़ैर वसीले से मिला है कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है "कुल हुवल लाहु अहद....." यानी ऐ मेहबूब आप फ़रमां दें कि अल्लाह तआ़ला वाहिद है इसी तरह कुरान मजीद में कई मक़ामात पर अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया ऐ मेहबूब आप फ़रमा दें अल्लाह तआ़ला ने कभी किसी बन्दे से ख़िताब नहीं किया बल्कि वो अपने नबी और रसूलों के ज़रिये हम तक अपनी बात पहुँचाता है हालाँकि अगर वो चाहे तो हमसे कलाम कर सकता है क्योंकि हर चीज़ उसके क़ब्ज़े कुदरत में है लेकिन वो कायनात का ख़ालिक व मालिक होकर हमसे कलाम नहीं करता तो क्या हम गुनाहगार बन्दे और गुलाम होकर उससे बराहे रास्त कलाम कैसे कर सकते हैं इसलिये हम अपनी बात को ज़रिया-ए-अम्बिया-किराम व ज़रिया-ए-औलिया-किराम को बनाते हैं क्योंकि ये अल्लाह के मुक़र्रब व मक़बूल और बरगुज़ीदा बन्दे हैं इसलिये अल्लाह तआ़ला इनके तवस्सुल से हमारी फ़रियाद और हाजात को जल्द सुनता है और अपनी बारगाह में कुबूल फ़रमाता है और इन्हीं के सदक़े व तुफ़ैल हमारी इमदाद फ़रमाता है और मसाइबो आलाम से रिहाई और निजात अ़ता फ़रमाता है।

ये बात नसे कुरआनी से भी साबित है और इसका इन्कार कुफ़्र है कि कोई भी इन्सान अल्लाह तबारक व तअ़ाला से बराहे रास्त हम कलाम नहीं हो सकता और उससे हम कलाम होने का शरफ़ सिर्फ़ अल्लाह तअ़ाला के मुन्तख़ब कर्दा अम्बिया-किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) को हासिल था। **चुनांचा कुरान मजीद में इरशादे बारी तअ़ाला है-**

''और बशर की (ये) मजाल नहीं कि अल्लाह उससे (बराहे रास्त) कलाम करे मगर (हाँ इसकी तीन सूरते हैं) ये कि वही के ज़रिये (किसी को शाने नबूवत से सरफ़राज़ फ़रमाये) या परदे के पीछे से (बात करे जैसे मूसा अ़लैहिस्सलाम से तूरे सीना पर की) या किसी फ़रिश्ते को भेजे दे और वो उसके इज़्न से जो अल्लाह चाहे वही करे बेशक वो बुलन्द मर्तबा (और) बड़ी हिकमत वाला है''।
(सू०-शूरा-51)

अल्लाह तबारक व तअ़ाला का ये फ़रमान इस बात पर दलालत करता है कि कोई बन्दा अल्लाह तअ़ाला से कलाम नहीं कर सकता क्योंकि अल्लाह तअ़ाला ने इस अम्र के लिये अपने नबी और रसूल को मुन्तख़ब किया और उन्हें मन्सबे रिसालत पर फ़ाइज़ फ़रमाया और वो सिर्फ़ अपने नबी और रसूल से ही बात करता है और अपने पैग़ाम तमाम इन्सानों तक पहुँचाता है अगर अल्लाह तबारक व तअ़ाला किसी बन्दे से कलाम करना चाहे तो दरमियान में वास्ता-ए-रिसालत ज़रूर लाता है अब किसकी ये मजाल कि नबी और रसूल के वास्ते के बग़ैर उससे हम कलाम होने की जुर्रत करे।

हज़रत मौला अ़ली (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) के क़ब्रे अनवर में दफ़न होने के तीन दिन बाद एक ऐराबी आये और उन्होंने खुद को क़ब्रे रसूल से मस

किया और अपने सर पर मिट्टी डालने लगे और यूँ अ़र्ज़ गुज़ार हुए कि या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) आपने जो कहा हमने सुना और अल्लाह तबारक व तआ़ाला के अहकाम हमें आपने दिये और आप पर नाज़िल होने वाली आयतों में से एक आयत ये भी है कि ऐ हबीब अगर वो लोग जो अपनी जानों पर ज़ुल्म कर बैठे थे और आपकी ख़िदमत में हाज़िर हो जाते और अल्लाह से माफ़ी तलब करते और रसूल भी उनके लिये मग़फ़िरत तलब करते तो वो (इस वसीले और शफ़ाअ़त की बिना) पर वो अल्लाह को ज़रूर तौबा कुबूल फ़रमाने वाला निहायत मेहरबान पाते (सू०-निसा-64) या रसूलल्लाह मैं आपकी बारगाह में आया हूँ ताकि आप मेरी मग़फ़िरत तलब करें (यानी मेरी मग़फ़िरत के लिये वसीला बनें) तो हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) की क़ब्रे अनवर से आवाज़ आई तहक़ीक़ के तुझे अल्लाह तआ़ाला ने (मेरे वसीले से) बख़्श दिया।
(बैहक़ी-शुअ़बुल-ईमान-3/393-ह०-4178)

मुफ़स्सिरीने-किराम की एक बड़ी जमाअ़त ने इस हदीस को इस आयत की तफ़सीर में नक़ल किया है और वसीला एक बड़ी अहम चीज़ है क्योंकि इन्सान के सारे आअ़माल मौत पर ख़त्म हो जाते हैं मगर वसीला पकड़ना मौत, क़ब्र, हश्र, यानी हर जगह ज़रूरी है क्योंकि क़ब्र में इन्हीं के नाम पर कामयाबी है और हश्र में इन्हीं के शफ़ाअ़ते वसीले से निजात है फिर भी अगर कोई कहे कि वसीला ज़रूरी नहीं तो बिल तहक़ीक़ वो मुनाफ़िक़ है क्योंकि अल्लाह की तौहीद का इक़रार रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) की रिसालत के बग़ैर मुम्किन नहीं और अल्लाह की इताअ़त रसूलुल्लाह की इताअ़त के बग़ैर मुम्किन नहीं है।

अल्लाह तबारक व तआ़ाला की माअ़रिफ़त और रसाई के लिये दरमियानी वसीला ज़रूरी है और सबसे बेहतर-

वसीला हुज़ूर सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) और अल्लाह तआ़ला के औलिया हैं जो शख़्स अल्लाह तआ़ला की माअ़रिफ़त चाहता हो तो उसे चाहिये कि अल्लाह तबारक व तआ़ला के बरगुज़ीदा व मख़सूस और मुर्क़रब व मक़बूल बन्दों को वसीला बनाये और सबसे अफ़ज़ल वसीला हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) की ज़ाते गिरामी है।

मज़कूरा कुरान मजीद की आयात से वाज़ेह हुआ कि वसीला वाजिब है और इसका इन्कार कुरान का इन्कार है जब अल्लाह तआ़ला खुद कुरान मजीद में फ़रमां रहा है "ऐ ईमान वालो अल्लाह की तरफ़ वसीला तलाश करो" तो इससे इन्कार करना गोया कुरान से इन्हिराफ़ है।

कुरान मजीद में एक और मक़ाम पर अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है–

ये लोग जिनकी इ़बादत करते हैं (यानी मलाइका, जिन्नात, ईसा और उजैर अ़लैहिमुस्सलाम बग़ैराह के बुत और तस्वीरें बनाकर उन्हें पूजते हैं) वो (तो खुद ही) अपने रब की तरफ़ वसीला तलाश करते हैं कि उनमें से (बारगाहे इलाही में) कौन ज़्यादा मुक़र्रब है और (वो खुद) उसकी रहमत के उम्मीदवार हैं और (वो खुद) उसके अ़ज़ाब से डरते हैं बेशक तेरे रब का अ़ज़ाब डरने की चीज़ है।
(सू०–बनी इसराईल–57)

सू०–निसा में इरशादे बारी तआ़ला है

जब वो अपनी जानों पर जुल्म करें तो ऐ महबूब वो तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर हों और फिर अल्लाह तआ़ला से माफ़ी चाहें और रसूल उनकी शफ़ाअ़त (सिफ़ारिश) फ़रमायें तो (वो) ज़रुर अल्लाह तआ़ला को बहुत तौबा कुबूल करने वाला मेहरबान पायें । (सू०–निसा–64)

मज़कूरा आयते करीमा के मफ़हूम में चन्द बातें क़ाबिले तवज्जो हैं कि जब गुनाहगार बन्दा अल्लाह तआ़ला से माफ़ी तलब करे तो बराहे रास्त नहीं बल्कि हुज़ूर (अ़लैहिस्सलाम) के तवस्सुल से अल्लाह तआ़ला से मग़फ़िरत तलब करे और उसमें शर्त ये है कि अल्लाह के महबूब उस गुनाहगार बन्दे की मग़फ़िरत की अल्लाह तआ़ला से सिफ़ारिश करें तब अल्लाह तआ़ला उसकी तलबे माफ़ी को ज़रुर कुबूल फ़रमायेगा और उस पर मज़ीद ये कि उस गुनाहगार बन्दे को अल्लाह की तरफ़ से माफ़ी के साथ-साथ अल्लाह की रहमत भी नसीब होगी यानी हुज़ूर (अ़लैहिस्सलाम) को वसीला बनाकर जब अल्लाह तआ़ला से अपने गुनाहों की माफ़ी माँगी जाये तो अल्लाह तआ़ला अपने मेहबूब की सिफ़ारिश और वसीले के सबब से गुनाहगार बन्दे के गुनाह माफ़ फ़रमाता है और अपनी रहमत से भी नवाज़ता है।

अल्लाह तबारक व तआ़ला इरशाद फ़रमाता है-
बेशक हमने तुम्हारे लिये रोशन फ़तह फ़रमा दी ताकि अल्लाह तआ़ला तुम्हारे सबब से तुम्हारे अगले और तुम्हारे पिछलों के गुनाह बख़्शे। (सू०-फ़तह-1-ता-2)

कुरान मजीद में इरशादे बारी तआ़ला है-
और जब उन पर (कोई) अ़ज़ाब वाक़ेअ़ होता तो वो कहते ऐ मूसा आप हमारे लिये अपने रब से दुआ़ करें उस अ़हद के वसीले से जो (उसका) आपके पास है अगर आप हमसे इस अ़ज़ाब को टाल दें तो हम ज़रुर आप पर ईमान ले आयेंगे और बनी इसराईल को (भी आज़ाद करके) आपके साथ भेज देंगे। (सू०-आअ़राफ़-7/134)

तफ़्सीर :- फ़िरऔन और उसकी क़ौम पर अल्लाह तआ़ला का अ़ज़ाब तूफ़ान, टिड्डियों, मेंढ़क, व खून और ताऊन की सूरत में नाज़िल होता था तो वो उस वक़्त हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) की बारगाह में हाज़िर होकर कहते थे कि-

ऐ मूसा हमारे लिये अपने रब से उस अ़हद के सबब से दुआ़ करें जो उसका तुम्हारे पास है कि हमारे ईमान लाने की सूरत में वो हमें अज़ाब न देगा अगर आपने हमसे ये अ़ज़ाब दूर कर दिया तो हम वाअ़दा करते हैं कि हम ज़रुर ईमान ले आयेंगे और आपके मुतालबे को पूरा करते हुये हम ज़रुर बनी इसराईल को आपके साथ र'वाना कर देंगे।

इस आयते करीमा से मालूम हुआ कि मुश्किलात में अल्लाह तआ़ला के मक्बूल बन्दों की बारगाह में हाज़िर होकर उनसे हाजत र'वाई का मुतालबा किया जा सकता है

इसी तरह औलाद अ़ता करना अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का काम है जबकि हज़रत जिबरईल (अ़लैहिस्सलाम) ने इसकी निसबत अपनी तरफ़ करते हुये हज़रत मरयम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से फ़रमाया– ''मैं तो फ़क्त तेरे रब का भेजा हुआ हूँ (और इसलिये आया हूँ) कि मैं तुझे एक पाकीज़ा बेटा अ़ता करूँ''। (सू०–मरयम–19)

इसी तरह परिन्दों को पैदा करना और मादरज़ाद अन्धों को बीनाई देना और कोढ़ियों को शिफ़ायाब करना और मुर्दों को ज़िन्दा करना अल्लाह तबारक व तआ़ला का काम है जबकि ईसा (अ़लैहिस्सलाम) ने इन कामों को अपनी तरफ़ मन्सूब करते हुये फ़रमाया– ''मैं तुम्हारे लिये मिट्टी से परिन्दे की शक्ल जैसा (एक पुतला) बनाता हूँ फिर मैं उसमें फूँक मारता हूँ सो वो अल्लाह के हुक्म से फ़ौरन उड़ने वाला परिन्दा बन जाता है और मैं मादरज़ाद अन्धे और सफेद दाग़ वालों को शिफ़ायाब करता हूँ और मैं अल्लाह के हुक्म से मुर्दे को ज़िन्दा कर देता हूँ।
(सू०–आले इमरान–49)

इसी तरह जब कभी सहाबा–किराम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) को कोई मुश्किल या कोई ज़रुरत या हाजात दरपेश होती तो वो हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम)

की तरफ रुजूअ़ करते और आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) उनकी मुश्किलात व हाजात को पूरा फ़रमां देते चुनांचा जंगे बदर में एक सहाबी की तलवार टूट गई तो वो हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) की बारगाह में हाज़िर हुये तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने उन्हें एक छड़ी दी जो उनके हाथ में पहुँचते ही तलवार बन गई इसी तरह जंगे उहद के मौक़े पर हज़रत क़तादा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) की आँख तीर लगने से निकल गई तो वो रहमते दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) की बारगाह में हाज़िर हुये तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने उन्हें आँख अ़ता कर दी।
(इब्ने अबी शैबा–किताबुल फ़ज़ाइल–7/542-ह०–15)
(अबू यआ़ाला–अल मुस्नद–1/501-ह०–1549)
(तबरानी–मुअजम कबीर–19/9-ह०–12)
(हाकिम अल मुस्तदरक–3/361-ह०–5348)

इसी तरह ग़जबा–ए–ख़ैबर के मौक़े पर हज़रत सलमा बिन अक्वाअ़ (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) अपनी टूटी हुई पिण्डली लेकर बारगाहे मुस्तफ़ा में हाज़िर हुये तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने उसी वक़्त उनकी टूटी हुई पिण्डली को दुरुस्त कर दिया।
(बुख़ारी–सही–4/214-ह०–4039)

इसी तरह क़हत से निजात पाने के लिये एक सहाबी ने आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) से दुआ़ की दरख़्वास्त की तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने दुआ़ फ़रमाई तो ऐसी बारिश हुई कि हफ़्ता भर रुकने का नाम न लिया।
(बुख़ारी–सही–1/624-ह०–ह०–1033)
(मुस्लिम–सही–2/357-ह०–2078)
(अबू दाऊद–सुनन–1/822–ह०–1174)
(नसाई–सुनन–1/572-ह०–1507)
(इब्ने माजा–सुनन–1/434-ह०–1269)

इसी तरह सहाबा-किराम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) एक मर्तबा सफ़र में थे कि पानी ख़त्म हो गया तो वो बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुये और अर्ज़ गुज़ार होकर अपनी हाजत का मुतालबा किया तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने उँगलियों से पानी का चश्मा बहाकर उन्हें सैराब कर दिया।
(तिर्मिज़ी-सुनन-2/1027-ह०-3631)
(बुख़ारी-सही-3/660-ह०-3573)

सू०-तौबा में इरशादे बारी तआला है-
और उन्हीं में से बाज़ ऐसे हैं जो सद्क़ात (की तक़सीम) में आप पर तअ़ना ज़नी करते हैं फिर अगर उन्हें उन (सद्क़ात) में से कुछ दे दिया जाये तो वो राज़ी हो जायें और अगर उन्हें उसमें से कुछ न दिया जाये तो वो फ़ौरन ख़फ़ा हो जाते हैं और क्या ही अच्छा होता अगर वो लोग इस पर राज़ी हो जाते जो उनको अल्लाह और उसके रसूल ने अ़ता फ़रमाया था और कहते कि हमें अल्लाह काफ़ी है अ़न्क़रीब हमें अल्लाह अपने फ़ज़्ल से और उसका रसूल (मज़ीद) अ़ता फ़रमायेगा बेशक हम अल्लाह ही की तरफ़ राग़िब हैं। (सू०-तौबा-58,59)

मज़कूरा आयते करीमा ने बाज़ लोगों के उन अक़वाल की नफ़ी कर दी जो कहते हैं बिला वास्ता और वसीला के सिर्फ़ अल्लाह से माँगो और अल्लाह के सिवा कोई अ़ता नहीं कर सकता तो बेशक हर चीज़ का मालिक पाक परवरदिगार है मगर वो अपनी अ़ता में वास्ता और वसीला ज़रुर बनाता है और हर चीज़ के लिये अल्लाह तआ़ला ने ज़राऐ पैदा किये और मज़कूरा आयते करीमा से ये बात पूरी तरह वाज़ेह हो गई कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसललम) भी अ़ता करने वाले हैं और इसका एक मफ़हूम ये भी है कि अल्लाह व रसूल की अ़ता एक ही है क्योंकि अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त क़ुरान मजीद की

सू० अहज़ाब में नेअ़मत अ़ता करने की निस्बत सरकारे दो आ़लम हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) की तरफ़ फ़रमाई है चुनांचा इरशादे बारी तआ़ला है–

''अल्लाह ने उसे नेअ़मत बख़्शी और ऐ नबी तुमने भी उसे नेअ़मत बख़्शी''। (सू०–अहज़ाब–37)

एक और मक़ाम पर अल्लाह तबारक व तआ़ला इरशाद फ़रमाता है–

''और उन्हें यही बुरा लगा कि अल्लाह और उसके रसूल ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से ग़नी कर दिया। (सू०–तौबा–74)

हदीस पाक में है नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसललम) ने फ़रमाया कि नेअ़मतों का मालिक अल्लाह है और मैं तक़सीम करने वाला हूँ यानी अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) भी अ़ता करते हैं।

सू०–बक़राह में इरशादे बारी तआ़ला है–

और जब उनके पास अल्लाह की तरफ़ से वो किताब (कुरान) आयी जो उस किताब (तौरात) की तस्दीक़ करने वाली है जो उनके पास मौजूद थी हालाँकि इससे पहले वो खुद (नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम और उन पर उतरने वाली किताब "कुरान" के वसीले से) काफ़िरो पर फ़तहयाबी (की दुआ़) माँगते थे।
(सू०–बक़राह–89)

तफ़्सीर :– इमामुल अम्बिया सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) की तशरीफ़ आवरी और कुरान मजीद के नुजूल से पहले यहूदी अपनी हाजात के लिये हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) के इस्मे पाक के वसीले से दुआ़ माँगा करते थे और कामयाब होते थे इस आयते करीमा में यहूदियों को वो वाक़्यात याद दिलाये जा रहे हैं कि पहले तुम उनके नाम के वसीले से दुआ़ माँगते थे अब

वो नबी तशरीफ़ ले आये तो तुम उनके मुन्किर हो गये इस आयते करीमा से ये भी मालूम हुआ कि आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) की दुनियाँ में तशरीफ़ आवरी से क़ब्ल आपके तवस्सुल से दुआयें माँगी जाती थीं और हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) के वसीले से मख़्लूक़ की हाजत र'वाई होती थी और ये तरीक़ा आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) की तशरीफ़ आवरी के बाद ज़ाहिरी हयाते तइयबा में जारी रहा कि सहाबा-किराम नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) के तवस्सुल से दुआयें माँगते थे और नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने अपने वसीले से दुआ माँगने की तअ़लीम भी फ़रमाई और आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) के विसाले ज़ाहिरी के बाद भी सहाबा-किराम का ये मामूल रहा और सल्फ़े सालिहीन का ये तरीक़ा रहा है और तब से आज तक जारी है और इंशा अल्लाह हमेशा जारी रहेगा।

कुरान व अहादीस और सहाबा-किराम की मुबारक ज़िन्दगी का मुतालाअ़ करें तो ऐसे वाक़्यात बाकसरत मिलेंगे जिनमें अम्बिया व औलिया और बुजुर्गाने दीन की मुबारक जिस्मों से मस होने वाली चीज़ों में शिफ़ा का बयान है जब युसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने अपनी कमीज़ दी और कहा कि ये मेरे वालिद याकूब अ़लैहिस्सलाम की आँखों से मस कर देना इसके वसीले से उनकी बीनाई लौट आयेगी इसका ज़िक्र कुरान मजीद में मज़कूर है-

मेरा ये कमीज़ ले जाओ सो इसे मेरे बाप के चेहरे पर डाल देना वो बीना हो जायेंगे।
(सू०-यूसुफ़-93)

और उस कमीज़ के ज़रिये से याकूब अ़लैहिस्सलाम की बीनाई लौट आयी इसका ज़िक्र कुरान में कुछ इस तरह है-

वो कमीज़ याकूब (अ़लैहिस्सलाम) के चेहरे पर डाल दी तो उसी वक़्त उनकी बीनाई लौट आयी। (सू०-युसूफ़-96)

उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) के पास हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) के चन्द मुए मुबारक थे जिन्हें आप (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) ने चाँदी की एक डिब्बी में रखा हुआ था जब लोग बीमार होते तो वो उन गेसुओं से बरकत हासिल करते और उनकी बरकत से शिफ़ा तलब करते और नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) के गेसुओं को पानी के प्याले में रखकर वो पानी पी जाते तो उन्हें शिफ़ा मिल जाया करती।

रोज़े क़यामत शफ़ाअ़त के लिये भी वसीले की हाजत और दरकार होगी चुनांचा इरशादे बारी तआ़ला है–

‘‘अल्लाह उसके सिवा कोई इ़बादत के लायक़ नहीं हमेशा ज़िन्दा रहने वाला है (तमाम आ़लम को अपनी तदबीर से) क़ायम रखने वाला है न उसको औंघ आती है और न ही नींद और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है सब उसी का है कौन ऐसा शख़्स है जो उसके हुजूर उसके इज़्न के बग़ैर सिफ़ारिश कर सके जो कुछ मख़्लूक़ात के सामने (हो रहा है या हो चुका) है और जो कुछ उनके बाद (होने वाला) है (वो) सब जानता है और वो उसकी मालूमात में से किसी चीज़ का भी इहाता नहीं कर सकते मगर जिस क़द्र वो चाहे उसकी कुर्सी (सल्तनत व कुदरत) तमाम आसमानों और ज़मीन को मुहीत है और उस पर उन दोनों (यानी ज़मीन व आसमान) की हिफ़ाज़त हरगिज़ दुश्वार नहीं वही सबसे बुलन्द रुतबा बड़ी अज़मत वाला है’’।
(सू०–बक़राह–255)

एक और मक़ाम पर अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है–

‘‘यक़ीनन तुम्हारा रब अल्लाह है जिसने आसमानों और ज़मीन (की बालाई व ज़ेरे कायनात) को छः दिनों (यानी छः मुद्दतों या मरहलों) में पैदा फ़रमाया फिर वो अ़र्श पर (अपनी शान के मुताबिक़ अपने इक़्तिदार के साथ) जलवा अफ़रोज़ हुआ वही हर काम की तदबीर फ़रमाता है (यानी

हर चीज़ को एक निज़ाम के तहत चलाता है उसके हुजूर) उसकी इजाज़त के बग़ैर कोई सिफ़ारिश करने वाला नहीं वही (अ़ज़मत व कुदरत वाला) अल्लाह तुम्हारा रब है सो तुम उसकी इ़बादत करो पस क्या तुम (कुबूले नसीहत के लिये) ग़ौर नहीं करते। (सू०-यूनुस-10/3)

रोज़े क़यामत अल्लाह तबारक व तअ़ाला के इज़्न से अम्बिया-किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) व औलिया-किराम और इजाज़त याफ़्तगान नेक सालिहीन बन्दों के सिवा कोई शफ़ाअ़त न कर सकेगा यानी रोज़े क़यामत शफ़ाअ़त के लिये भी वसीले की दरकार और ज़रूरत होगी और जो लोग ये कहते हैं कि वसीला ज़रूरी नहीं है तो वो लोग रोज़े क़यामत अपनी शफ़ाअ़त के लिये हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) को वसीला न बनायें बलिक खुद अल्लाह तअ़ाला से अपनी सिफ़ारिश करें हालाँकि वो ऐसा हरगिज़ न कर सकेंगे।

और ऐसे लोग जो कहते हैं बग़ैर वसीले के बराहे रास्त अल्लाह से मांगो क्या ऐसे लोगों के पास अल्लाह तअ़ाला की अ़ता कर्दा कोई ऐसी सनद है या उन्हें ये यक़ीन है कि अल्लाह तअ़ाला ने उन्हें इजाज़त याफ़्तगान बन्दों के जुमरे में शामिल कर रखा है या उन्हें शफ़ाअ़त की हाजत ही नहीं या फिर वो उस शरफ़ और मर्तबे के हामिल हैं कि अल्लाह तअ़ाला से खुद अपनी सिफ़ारिश कर सकें जिस दिन अल्लाह तअ़ाला इतना ग़ज़बनाक होगा कि न इससे पहले कभी हुआ था और न इसके बाद कभी होगा और उस वक़्त नफ़्सी-नफ़्सी का अ़ालम होगा जब अम्बिया-किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) भी इज़्ने खुदा के बग़ैर बात न कर सकेंगे और जो ये कहते हैं कि वसीला ज़रूरी नहीं और ऐसी बात और ऐसा बातिल गुमान रखने बाले लोग अव्वल दर्जे के जाहिल और गुमराह और बेदीन हैं हालांकि हक़ीक़त ये है कि दुनियाँ व आख़िरत में बग़ैर वसीला के कामयाबी और निजात का मिलना मुहाल है इसलिये अल्लाह तअ़ाला के मुक़र्रब ब मक़बूल और मख़सूस व बरगुज़ीदा बन्दों का वसीला वाजिब है।

रोज़े क़यामत शफ़ाअ़त व इज़्ने ख़ुदा से मुताअ़ल्लिक़ चन्द क़ुरआनी आयात–

''उस दिन सिफ़ारिश सूदमन्द न होगी सिवाये उस शख़्स (की सिफारिश) के जिसे (ख़ुदाये) रहमान ने इज़्न (व इजाज़त) दे दी है और जिसकी बात से वो राज़ी हो गया है''। (सू०–ताहा–20/109)

''उस दिन लोग शफ़ाअ़त के मालिक न होंगे सिवाये उनके जिन्होंने (ख़ुदाये) रहमान से वायदा (शफ़ाअ़त) ले लिया है'' (सू०–मरयम–19/87)

''और उसकी बारगाह में शफ़ाअ़त नफ़अ़ न देगी सिवाये जिसके हक़ में उसने इज़्न दिया होगा यहां तक कि जब उनके दिलों से घबराहट दूर कर दी जायेगी तो वो कहेंगे तुम्हारे रब ने क्या फ़रमाया वो (जवाबन) कहेंगे हक़ फ़रमाया (यानी इज़्न दे दिया) वही निहायत बुलन्द बहुत बड़ा है''। (सू०–सवा–34/23)

''और जिनकी ये (काफ़िर लोग) अल्लाह के सिवा परस्तिश करते हैं वो (तो) शफ़ाअ़त का (कोई) इख़्तियार नहीं रखते मगर (उनके बरअक्स शफ़ाअ़त का इख़्तियार उनको हासिल है) जिन्होंने हक़ की गवाही दी और वो उसे (यक़ीन के साथ) जानते भी थे''। (सू०–ज़ुख़रुफ़–43/86)

क़ुरान मजीद की मुतफ़र्रिक आयात की रोशनी में ये बात साबित हुई कि वसीला वाजिब है और अल्लाह तआ़ला के बरगुज़ीदा व मक़बूल और मुक़र्रब बन्दों के तवस्सुल के बग़ैर कोई दुआ़ शरफ़े मक़बूलियत नहीं पाती इसलिये हर दुआ़ में अम्बिया–किराम अलैहिमुस्सलाम और औलिया–किराम व सूफ़िया–इज़ाम और अल्लाह तआ़ला के नेक सालिहीन बन्दों का वसीला ज़रुरी है।

-: अहादीस से इस्तिदलाल :-

- हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की दुआ़ हुजूर के वसीले से -

हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया–
जब हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम से ख़ता सरज़द हुई तो उन्हें दुनियाँ में भेज दिया गया तो उन्होंने बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ किया कि ऐ मेरे परवरदिगार मैं तुझसे मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) के वसीले से सवाल करता हूँ कि मुझे माफ़ फ़रमां दे इस पर अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि ऐ आदम तूने मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) को किस तरह पहचाना हालाँकि अभी तक मैंने उन्हें पैदा भी नहीं किया तो आदम (अ़लैहिस्सलाम) ने अ़र्ज़ किया कि ऐ परवरदिगार जब तूने अपने दस्ते कुदरत से मझे तख़लीक़ किया और अपनी रुह मेरे अन्दर फूँकी फिर मैंने अपना सर उठाया तो अ़र्श के हर सुतून पर "ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" लिखा देखा तो मैंने जान लिया कि तेरे नाम के साथ उसी का नाम हो सकता है जो तमाम मख़लूक़ में तुझे सबसे ज़्यादा महबूब हो इस पर अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया– ऐ आदम तूने सच कहा है मुझे सारी मख़लूक़ में सबसे ज़्यादा महबूब वही है अब जबकि तुमने उनके वसीले से मुझसे माफ़ी तलब की है तो मैंने तुम्हें माफ़ कर दिया और अगर मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) न होते तो मैं तुझे भी पैदा न करता।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–3/786-ह०–4228)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–5/115-ह०–6502)
(हाकिम–अल मुस्तदरक अरबी–2/722-ह०–4887)

– हुज़ूर ने खुद अपने वसीले से दुआ की –

हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत है कि सरकारे दो आलम सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआला अलैह वसल्लम) हज़रत फ़ातिमा बिन्ते असद (हज़रत मौला अली रज़िअल्लाहु तआला अन्हु की माँ) की क़ब्र में उतरे और खुद दुआ फ़रमाई कि ऐ अल्लाह जो ज़िन्दा और सलामत है जो दायम व क़ायम है और जो फ़ौत नहीं होगा ऐ अल्लाह फ़ातिमा बिन्ते असद की बख़्शिश फ़रमां इसकी क़ब्र को वसीअ़ कर दे तुझे तेरे नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैह वसल्लम) का वसीला और उन सब नबियों का वसीला जो मुझसे पहले हुये।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–24/351-ह०–871)

– हज़रत अ़ब्बास का वसीला –

हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत है कि जब क़ह्त पड़ जाता तो हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) बारिश की दुआ हज़रत अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) के वसीले से माँगा करते थे और कहते थे ऐ अल्लाह हम तेरी बारगाह में अपने नबी मुकर्रम (सल्लल्लाहु तआला अलैह वसल्लम) का वसीला पकड़ा करते थे तो तू हम पर बारिश बरसा देता था और अब हम तेरी बारगाह में अपने नबी (सल्लल्लाहु तआला अलैह वसल्लम) के चचा जान को वसीला बनाते हैं तू हम पर बारिश बरसा फ़रमाया– तो उन पर बारिश बरसा दी जाती थी।
(बुख़ारी–सही–3/743-ह०–3710)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–3/49-ह०–2437)
(इब्ने हिब्बान–सही–7/110-ह०–2861)

- नमाज़ के वसीले से दुआ़ -

हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने इरशाद फ़रमाया-
जो शख़्स नमाज़ के इरादे से अपने घर से निकले और ये दुआ़ माँगे कि "ऐ अल्लाह मैं तुझसे सवाल करता हूँ उस हक़ की वजह से जो माँगने वालों का तूने अपने ज़िम्मे ले रखा है" यानी सायलीन के वसीले से सवाल करता हूँ और मैं तुझसे (नमाज़ की तरफ़ उठने वाले) अपने क़दमों के वसीले से सवाल करता हूँ बेशक मैं न किसी बुराई की तरफ़ चला हूँ और न तकब्बुर और न दिखाने और न सुनाने के लिये चला हूँ और न किसी शोहरत के ख़ातिर निकला हूँ बल्कि तेरी रज़ा जोई के लिये निकला हूँ सो मैं तुझसे सवाल करता हूँ कि मुझे दोज़ख़ की आग से निजात दे और मेरे गुनाहों को बख़्श दे बेशक तू ही गुनाहों को बख़्शने वाला है तो अल्लाह तआ़ला उसकी तरफ़ मुतवज्जै होता है और सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उसकी मग़फ़िरत की दुआ़ करते हैं।
(इब्ने माजा-सुनन-1/273-ह०-778)
(अहमद बिन हम्बल-अल मुस्नद-5/64-ह०-11173)

-हज़रत उवैस क़रनी के वसीले से दुआ़-

हज़रत उसैर बिन जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि अहले कूफ़ा एक वफ़्द लेकर हज़रत ड़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) के पास गये वफ़्द में एक ऐसा आदमी था जो हज़रत उवैस करनी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मज़ाक किया करता था हज़रत ड़मर ने पूछा यहाँ कोई क़रन का रहने वाला है ये सुनकर वो शख़्स हाज़िर हुआ तो हज़रत ड़मर ने बयान फ़रमाया-कि नबी करीम

(सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया था कि तुम्हारे पास यमन से एक शख़्स आयेगा उसका नाम उवैस (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) होगा तुममें से जिस शख़्स की उससे मुलाक़ात हो तो उसे चाहिये कि उससे अपनी मग़फ़िरत की दुआ़ कराये।
(मुस्लिम–सही–6/179-ह०–6490)

– अल्लाह के ख़ास बन्दों की हाजत रवाई –

हज़रत अ़ब्दुल्ला बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया–
बेशक अल्लाह तआ़ाला के कुछ ख़ास बन्दे ऐसे हैं कि अल्लाह तआ़ाला ने उन्हें मख़लूक़ की हाजत र'वाई के लिये ख़ास फ़रमाया है लोग घबराये हुये अपनी हाजतें उनके पास लेकर जाते हैं (और वो उनकी हाजत र'वाई करते हैं) अल्लाह तआ़ाला के वो ख़ास बन्दे अ़ज़ाबे इलाही से अमान में है।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–12/358-ह०–13334)
(अत्तरग़ीब वत्तरहीब–3/262-ह०–3966)

– नेक सालेह बन्दों से सवाल करना –

हज़रत फ़िरासी (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) ने हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम से अ़र्ज़ किया क्या मैं लोगों से (अपनी हाजत) का सवाल कर सकता हूँ तो आप सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया– नहीं हाँ अगर तुझको माँगने की ज़रुरत पेश आ जाये तो नेक सालेह बन्दों से सवाल कर लिया कर।
(अबू दाऊद–सुनन–2/311-ह०–1646)

– सहाबा, ताबईन के तवस्सुल से फ़तह –

हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसललम ने इरशाद फ़रमाया कि–
लोगों पर एक ऐसा ज़माना आयेगा जब लोगों की बड़ी जमाअ़त जिहाद करेगी तो उनसे पूछा जायेगा क्या तुममें से कोई ऐसा शख़्स है जो हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसललम) की सुहवत में रहा हो पस वो लोग कहेंगे हाँ तो उन्हे (उन सहाबा के तवससुल से) फ़तह हासिल हो जायेगी फिर लोगों पर एक ऐसा ज़माना आयेगा कि जब लोगों की एक बड़ी जमाअ़त जिहाद करेगी तो उनसे पूछा जायेगा क्या तुममें से कोई ऐसा शख़्स है जिसने असहाबे रसूल की सुहवत पाई हो तो वो कहेंगे हाँ तो फिर उन्हें (ताबईन के तवस्सुल से) फ़तह हासिल हो जायेगी फिर लोगों पर एक ऐसा ज़माना आयेगा कि एक कसीर जमाअ़त जिहाद करेगी तो उनसे पूछा जायेगा कि तुम्हारे दरमियान कोई ऐसा शख़्स है जिसने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) के असहाब की सुहवत पाने वालो की सुहवत पाई हो तो वो कहेंगे हाँ तो उन्हें (तबअ़ ताबईन के तवस्सुल से) फ़तह दे दी जायेगी।
(बुख़ारी–सही–3/700-ह०–3649)
(मुस्लिम–सही–6/174-ह०–6467)
(इब्ने हिब्बान–सही–5/719-ह०–4768)

– हज़रत गौसुल आज़म का वसीला –

हज़रत गौसुल आज़म अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि जब तुम अल्लाह तआ़ला से कोई हाजत तलब करो तो मेरे वसीले से तलब करो।
(वहजतुल असरार–23)

– वसीला दुरुद–ए–पाक –

हज़रत अबू मसऊ़द अन्सारी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने इरशाद फ़रमाया–जिसने नमाज़ पढ़ी और मुझ पर और मेरे अहले बैत पर दुरुद न पढ़ा तो उसकी नमाज़ क़ुबूल न होगी ।
(दार–कुतनी–सुनन–1/355-ह०–706)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–2/530-ह०–3969)

– बन्दो से मदद माँगना –

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने इरशाद फ़रमाया–जब तुममें से किसी की सवारी जंगल बयाबान में गुम हो जाये तो उसको ये पुकारना चाहिये ऐ अल्लाह के बन्दों मेरी सवारी पकड़ा दो बेशक अल्लाह तआ़ला के बहुत से (ऐसे) बन्दे उस ज़मीन में होते हैं वो तुम्हें तुम्हारी सवारी पकड़ा देंगे।
(अबू यआला–अल मुस्नद–1/1465-ह०–5269)
(इब्ने अबी शैबा–अल मुसन्निफ़–6/103-ह०–29818)
(तबरानी–मुअजम कबीर–10/267-ह०–10518)
(इब्ने अबी शैबा–अल मुसन्निफ़–8/729-ह०–30438)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) फ़रमाते हैं कि बेशक अल्लाह तआ़ला के बाज़ फ़रिश्ते इन्सान के आमाल लिखने वाले फ़रिश्तों के अलावा ऐसे भी हैं जो दरख़्तों के पत्ते गिरने तक वो लिखते हैं पस तुममें से जब कोई किसी जगह (किसी भी मुश्किल में) जाये जहाँ बा ज़ाहिर उसका कोई मददगार भी न हो तो

उसे चाहिये कि वो पुकार कर कहे ऐ अल्लाह के बन्दो अल्लाह तआ़ला तुम पर रहम फ़रमाये हमारी मदद करो तो उसकी मदद की जायेगी।
(इब्ने अबी शैबा–अल मुसन्निफ़–8/700-ह०–30339)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–6/128-ह०–7697)

हज़रत उतबा बिन गज़वान (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया– जब तुममें से किसी की कोई शैः गुम हो जाये या तुममें से कोई मदद चाहे और वो ऐसी जगह हो जहाँ उसका कोई मददगार न हो तो उसे चाहिये कि यूँ पुकारे ऐ अल्लाह के बन्दो मेरी मदद करो ऐ अल्लाह के बन्दो मेरी मदद करो यक़ीनन अल्लाह तआ़ला के ऐसे भी बन्दे हैं जिन्हें हम देख नहीं सकते (लेकिन वो लोगों की मदद करने पर मामूर हैं) रावी बयान करते हैं कि ये आजमाई हुई बात है।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–17/117-ह०–290)

मज़कूरा अहादीसे मुबारका इस पर वाज़ेह दलील है कि जो लोग ये कहते हैं कि मज़ारात पर कुछ नहीं मिलता और अल्लाह के वली किसी को कुछ नहीं देते और न किसी तरह सें मदद करते हैं तो जब मुश्किल वक़्त में अल्लाह के बन्दो से मदद मांगने से मदद मिलती है तो वो जो मज़ारात में मदफ़ून अल्लाह के दोस्त औलिया अल्लाह हमारी मदद क्यों नहीं कर सकते और ऐसा अ़क़ीदा रखना कि अल्लाह के नेक सालिहीन मुक़र्रब व मक़बूल बन्दे किसी की कोई मदद नहीं कर सकते तो ऐसा अ़क़ीदा बातिल व गुमराही है बल्कि हक़ीक़त ये है कि अल्लाह के मुक़र्रब व मक़बूल बन्दे औलिया–किराम व सूफ़िया इज़ाम से सिद्क़ दिल और सच्ची अ़क़ीदत और इख़्लास के साथ उनको वसीला बनाकर जो दुआ़ की जाये वो बारगाहे ख़ुदावन्दी में शरफ़े मक़बूलियत पाती है।

– हुजूर के चेहरे अनवर के वसीले से दुआ़ –

हज़रत अ़ब्दुल्ला बिन दीनार (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत अ़ब्दुल्ला बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) को हज़रत अबू तालिब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अन्हु) का ये शेर पढ़ते हुये सुना।

“वो गोरे मुखड़े वाले (मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल०)
जिनके चेहरे अनवर के तवस्सुल से बारिश माँगी
जाती है जो यतीमों के वाली बेवाओं के सहारा है”

हज़रत अ़ब्दुल्ला बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) फ़रमाते हैं मैं कभी शायर की उस बात को याद करता हूँ और कभी हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) के चेहरे अक़्दस को तकता हूँ कि इस (रुखे ज़ैबा के तवस्सुल से बारिश माँगी जाती है) तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) (मिम्बर से) उतरने भी न पाते कि सारे परनाले बहने लगते।
(बुख़ारी–सही–1/611-ह०–1008,1009)
(इब्ने माजा–सुनन–1/436-ह०–1272)
(अहमद बिन हम्बल–अल मुस्नद–3/296-ह०–5673)

हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से मरवी है कि वो ये अशआ़र पढ़ा करती थीं और अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) (इन अशआ़र के बारे में) फ़रमाते थे “वो गोरे मुखड़े वाले जिनके चेहरे अनवर के तवस्सुल से बारिश माँगी जाती है यतीमों के वाली बेवाओं के सहारा है” तो ये अशआ़र सुनकर फ़रमाया अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की क़सम इससे मुराद हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) की ज़ात बाला सिफ़ात ही है (इब्ने अबी शैबा अल मुसन्निफ–5/279-26067) (6/565-31967) (अहमद बिन हम्बल–अल मुस्नद–1/87-26)

– हुज़ूर (अ़लैहिस्सलाम) के वसीले से बारिश –

एक मर्तबा अहले मक्का क़हत में मुब्तिला थे पस कुरैश ने हज़रत अबू तालिब (अ़लैहिस्सलाम) से कहा कि पूरा इलाक़ा क़हत ज़दा हो गया है और लोग क़हत में मुब्तिला हैं पस आप जल्दी तशरीफ़ लायें और बारिश के लिये दुआ़ करें तब हज़रत अबू तालिब (अ़लैहिस्सलाम) दुआ़ के लिये निकले और उनके साथ एक खूबसूरत हसीन नूरानी बच्चा (यानी सरकारे दो आ़लम नूरे मुजस्सम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) हमराह थे पस हज़रत अबू तालिब (अ़लैहिस्सलाम) ने उस बच्चे को थामा और पुश्त को कअ़बा शरीफ़ से लगा दिया और अपनी उँगलियों से उस बच्चे की तरफ़ इशारा किया उस वक़्त आसमान में बादलों का नामो-निशान न था पस बादल इधर उधर से इकट्ठा होना शुरुअ़ हो गये और फिर मूसलाधार बारिश हुई जिसकी वजह से वादी पानी से भर गई और हर तरफ़ खुशहाली और फराख़ी हो गई इस बारे में हज़रत अबू तालिब (अ़लैहिस्सलाम) ने ये अशआ़र कहे थे–

**"वो गोरे मुखड़े वाले (मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल०)
जिनके चेहरे अनवर के तवस्सुल से बारिश माँगी
जाती है जो यतीमों के वाली बेवाओं के सहारा है"**

(इमाम जलालुद्दीन सयूती–ख़साइसुल कुबरा–1/173)

हज़रत औस बिन अ़ब्दुल्ला से मरवी है कि मदीने के लोग सख़्त क़हत में मुब्तिला हो गये तो उन्होंने हज़रत उम्मुल मोमिनीन आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से शिकायत की तो उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) ने फ़रमाया–

कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) की क़ब्रे अनवर (यानी रोज़ा अक़दस) के पास जाओ और उससे एक खिड़की (सूराख़) आसमान की तरफ़ इस तरह खोलो कि क़ब्रे अनवर और आसमान के दरमियान कोई पर्दा हाइल न रहे रावी कहते हैं उन्होंने ऐसा ही किया तो बहुत ज़्यादा बारिश हुई यहाँ तक कि खूब सब्ज़ा उग आया और ऊँट इतने मोटे हो गये कि (महसूस होता था) जैसे वो चर्बी से फट पड़ेगे।
(दारमी–सुनन–1/133-ह०–93)

– हुज़ूर की क़ब्रे अनवर को वसीला बनाना –

अबू हर्ब (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) बयान करते हैं कि एक एराबी ने फ़रीज़ा हज अदा किया फिर वो मस्जिदे नबवी में हाज़िर हुआ और हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) की क़ब्रे अनवर के पास आया और नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) के क़दमैन मुबारक की जानिब खड़ा हुआ और अ़र्ज़ किया अस्सलामु अ़लैका या रसूलुल्लाह फिर हज़रत अबू बक्र और हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) की ख़िदमत में सलाम अ़र्ज़ किया फिर हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) की जानिब खड़ा हुआ और अर्ज़ करने लगा या रसूलुल्लाह मेरे माँ बाप आप पर कुर्बान हो मैं गुनाहों और ख़ताओं से लदा हुआ हूँ आपकी बारगाहे अक़दस में हाज़िर हुआ ताकि आपके रब की बारगाह में आपको अपनी बख़्शिश का वसीला बना सकूँ क्योंकि अल्लाह तआ़ाला ने अपनी किताब **कुरान पाक में फ़रमाया–**

‘‘(ऐ हबीब) अगर वो लोग जब अपनी जानो पर जुल्म कर बैठें और आपकी ख़िदमत में हाज़िर हो जायें और अल्लाह से माफ़ी तलब करें और अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) भी उनके लिये मग़फ़िरत तलब करें

तो वो (इस वसीले और शफ़ाअ़त की बिना पर) ज़रुर अल्लाह तआ़ला को बहुत तौबा कुबूल करने वाला निहायत मेहरबान पायेगा- या रसूलुल्लाह मैं आपके रब के हुजूर आपको वसीला बनाता हूँ और ये (अ़र्ज़ करता हूँ) कि आप (अपने रब की बारगाह में) मेरे हक़ में सिफ़ारिश फ़रमायें। (बैहक़ी-शुअबुल ईमान-3/393-ह०-4178)
(इब्ने कसीर-तफ़्सीरुल कुरानुल अ़ज़ीम-1/521)
(सयूती-दुर्रे मन्सूर-1/580)

- हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) का खूने पाक जिस जिस्म में हो उसे आग छू नहीं सकती -

हज़रत असमा बिन्ते अबू बक्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अन्हा) फ़रमाती हैं कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने पिछने लगवाये (और पिछनो से निकलने वाला) खून मुबारक आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने मेरे बेटे अ़ब्दुल्ला बिन जुबैर को अ़ता फ़रमाया (ताकि वो कहीं उसे दफ़न कर दें तो) उन्होंने उस खून मुबारक को पी लिया पस उसी वक़्त हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) की ख़िदमत में जिबरईल (अ़लैहिस्सलाम) हाज़िर हुये और आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) को इस वाक़्ये की ख़बर दी तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने दरयाफ़्त फ़रमाया- तुमने (उस खून का) क्या किया उन्होने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह मुझे ये बात अच्छी नहीं लगी कि मैं आपका खून मुबारक ज़मीन पर उँढ़ेल दूँ सो मैंने पी लिया तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया तुम्हें दोज़ख की आग कभी छू नहीं सकती और आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने उसके सर पर अपना दस्ते रहमत फेरा और फ़रमाया- तू लोगों से महफ़ूज़ हो गया और लोग तुझसे महफ़ूज़ हो गये।.
(अबू नुऐम-हिलयातुल औलिया-1/330)
(बैहक़ी-शुअ़बुल ईमान-5/208-ह०-6489)
(इब्ने असाकर-तारीख़ दमिश्क़-20/233)

– हुज़ूर के वसीले से दुआ़ मक्बूल होती है –

हज़रत उस्मान बिन हुनैफ़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) रिवायत करते हैं कि एक नाबीना शख़्स सरकारे दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह मेरे लिये ख़ैर व आ़फ़ियत की दुआ़ फ़रमाइये आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया– अगर तू चाहे तो मैं तेरे लिये आख़िरत की दुआ़ कर दूँ जो तेरे लिये बेहतर है और अगर तू चाहे तो तेरे लिये अभी ख़ैर की दुआ़ कर दूँ उसने अ़र्ज़ किया कि या–रसूलुल्लाह अभी दुआ़ फ़रमां दीजिये आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने उसे अच्छी तरह वुज़ू करने और दो–रकअ़त नमाज़ पढ़ने का हुक्म दिया और फ़रमाया कि ये दुआ़ करना– अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुका व अता वज्जहू इलैका बि नबिइइका मुहम्मदिन नबीइर्रहमति या मुहम्मदु इन्नी क़द तवज्जाहुतु बिका इला रब्बि फ़ी हाजति हाज़िहि लितुक़्दा अल्लाहुम्मा फ़शफ़्फ़िउहू फ़ी (तर्जुमा–ऐ–अल्लाह मैं तुझसे सवाल करता हूँ और तेरी तरफ़ तवज्जो करता हूँ नबी रहमत मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) के वसीले से अपने रब की बारगाह में अपनी हाजत पेश करता हूँ कि पूरी हो ऐ अल्लाह मेरे हक़ में शफ़ाअ़त कुबूल शफ़ाअ़त कुबूल फ़रमां)।

(तिर्मिज़ी–सुनन–2/998-ह०–3578)
(नसाई–सुनन कुबरा–6/168-ह०–10494,10495)
(इब्ने माजा–सुनन–1/469-ह०–1385)
(इब्ने खुज़ेमा–सही–2/385-ह०–1219)
(अहमद बिन हम्बल–अल मुस्नद–7/160-ह०–17372,17242)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–1/270-ह०–1209)
(तबरानी–मुअजम सग़ीर–1/306-ह०–508 व
मुअज़म कबीर–9/30-ह०–8311)
(मुन्जरी–अत्तरगीब वत्तरहीब–1/272-ह०–1018)

– हश्र उसी के साथ जिससे मुहब्बत हो –

हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) कि क़यामत कब क़ायम होगी तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया– तूने क़यामत के लिये क्या तैयारी की है उसने अ़र्ज़ किया या– रसूलुल्लाह मेरे पास न ज़्यादा नमाज़े हैं और न ज़्यादा रोज़े मगर इतना है कि मैं अल्लाह और उसके रसूल को दोस्त रखता हूँ और मुहब्बत करता हूँ तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया– क़यामत के दिन आदमी हश्र उसी के साथ होगा जिससे वो मुहब्बत करता है और उसे दोस्त रखता है।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/223-ह०–2385)

– रोज़े क़यामत वसीला–ए–शफ़ाअ़ते हुज़ूर –

हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया मैं क़यामत के रोज़ तमाम इन्सानो का सरदार हूँ अल्लाह तआ़ला अगलों पिछलों को एक चटयल मैदान में जमा करेगा और सूरज उनके बिल्कुल नज़दीक आ जायेगा उस वक़्त बाज़ लोग कहेंगे क्या तुम नहीं देखते कि तुम किस हाल में हो किस मुसीबत में मुब्तिला हो सो ऐसे शख़्स को तलाश क्यों नहीं करते जो तुम्हारे रब के हुज़ूर तुम्हारी शफ़ाअ़त करे बाज़ लोग कहेंगे तुम सबके बाप तो हज़रत आदम (अ़लैहिस्सलाम) हैं फिर वो उनकी ख़िदमत में हाज़िर होकर अ़र्ज़ करेंगे ऐ सय्यदना आदम आप अबुल बशर हैं क्या आप अपने रब के हुज़ूर हमारी शफ़ाअ़त नहीं फ़रमायेंगे क्या आप नहीं देखते कि हम किस मुसीबत में गिरफ़्तार हैं–

और हम किस हाल को पहुँच गये हैं हज़रत आदम (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमायेंगे मेरा रब आज इतना ग़जबनाक है कि इतना गज़बनाक न वो पहले हुआ था और न कभी बाद में होगा मुझे उसने एक दरख़्त से मना फ़रमाया था तो मुझसे उसके हुक्म में लगज़िश हुई लिहाज़ा मुझे अपनी फ़िक्र है तुम किसी दूसरे के पास चले जाओ तुम हज़रत नूह (अ़लैहिस्सलाम) के पास जाओ तब लोग हज़रत नूह (अ़लैहिस्सलाम) की बारगाह में हाज़िर होकर अ़र्ज़ करेंगे ऐ सय्यदना नूह (अ़लैहिस्सलाम) आप अहले ज़मीन के सबसे पहले रसूल हैं और अल्लाह तआ़ला ने आपका नाम शकूर (शुक्र गुज़ार बन्दा) रखा क्या आप नहीं देखते हम किस मसाइबो आलाम में गिरफ़्तार हैं क्या आप अपने रब के हुजूर हमारी शफ़ाअ़त नहीं फ़रमायेंगे तब हज़रत नूह (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमायेंगे मेरे रब ने आज ग़ज़ब का वो इज़हार फ़रमाया है कि न पहले ऐसा इज़हार फ़रमाया था और न आइन्दा ऐसा इज़हार फ़रमायेगा मुझे खुद अपनी फिक्र है तुम किसी और के पास चले जाओ

फिर इसी तरह लोग दीगर अम्बिया इब्राहीम, मूसा, ईसा (अ़लैहिमुस्सलाम) वग़ैराह के पास जायेंगे और इसी तरह का न में जबाब पायेंगे बिल आख़िर उन्हें कहा जायेगा कि तुम हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) की ख़िदमते अक़दस में जाओ आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया-फिर लोग मेरे पास आयेंगे तो मैं अ़र्श के नीचे बारगाहे इलाही में सज्दा करुँगा और (अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से) फ़रमाया जायेगा ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) अपना सर उठाओ और शफ़ाअ़त करें आपकी शफ़ाअ़त कुबूल की जायेगी माँगे आपको अ़ता किया जायेगा और आपकी बात सुनी जायेगी फिर मैं अर्ज़ करुँगा ऐ मेरे रब मेरी उ़म्मत-मेरी उ़म्मत कहा जायेगा जाओ दोज़ख़ से उन लोगों को निकाल लाओ जिनके दिलों में एक जौ के बराबर ईमान है चुनांचा मैं जाऊँगा

और तामीले हुक्म करूँगा फिर मैं वापस आऊँगा और तारीफ़ी कलिमात से अल्लाह तआ़ला की हम्द व सना करूँगा और अल्लाह तआ़ला के हुज़ूर सज्दे में गिर जाऊँगा फिर मुझे कहा जायेगा अपना सर उठाओ कहो आपकी बात सुनी जायेगी सवाल करो आपका सवाल पूरा किया जायेगा सिफ़ारिश करो तुम्हारी सिफ़ारिश कुबूल की जायेगी मैं अ़र्ज़ करूँगा ऐ मेरे रब मेरी उ़म्मत-मेरी उ़म्मत मुझे कहा जायेगा जाओ उन लोगों को दोज़ख़ से निकाल लाओ जिनके दिलों में ज़र्रा या राई के दाने के बराबर भी ईमान है चुनांचा मैं जाऊँगा और तामीले हुक्म करूँगा मैं फिर वापस आऊँगा और तारीफ़ी कलिमात से अल्लाह तआ़ला की हम्द व सना करूँगा और अल्लाह तआ़ला के हुज़ूर सज्दे में गिर जाऊँगा

फिर मुझसे कहा (जायेगा) अपना सर उठाओ कहो आपकी बात सुनी जायेगी सवाल करो आपका सवाल पूरा किया जायेगा सिफ़ारिश करो आपकी सिफ़ारिश कुबूल की जायेगी मैं अ़र्ज़ करूँगा ऐ मेरे रब मेरी उ़म्मत-मेरी उ़म्मत मुझे कहा जायेगा कि जाओ और उन लोगों को दोज़ख़ से निकाल लाओ जिनके दिलों में राई के दाने से भी कम ईमान हो मैं जाऊँगा और तामीले हुक्म करूँगा फिर मैं चौथी बार वापस आऊँगा और तारीफ़ी कलिमात से अल्लाह तआ़ला की हम्द व सना करूँगा फिर अल्लाह तआ़ला के हुज़ूर सज्दे में गिर जाऊँगा तब अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) अपना सर उठाओ जो कहोगे उसे सुना जायेगा जो माँगोगे दिया जायेगा जो शफ़ाअ़त करोगे कुबूल की जायेगी मैं अ़र्ज़ करूँगा ऐ मेरे रब मुझे उन लोगों को भी जहन्नुम से निकालने की इजाज़त दे जिन्होंने सिर्फ़ ला इलाहा इल्लल्लाह ही कहा था अल्लाह तआ़ला मुझे उन्हें निकालने की इजाज़त देगा फिर मैं दोज़ख़ से उन लोगों को भी निकालूँगा जिन्होंने सिर्फ़ ला इलाहा इल्लल्लाह कहा है।
(बुख़ारी-सही-6/624-ह०-7510) (बुख़ारी-सही-3/515-ह०-3340)
(मुस्लिम-सही-1/329-ह०-480)(तिर्मिज़ी-सुनन-2/253-ह०-2434)

– हुजूर के वसीले से जहन्नुमी बाहर निकलेंगे –

इमरान बिन हुसैन (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया– कि एक क़ौम हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) की शफ़ाअ़त से जहन्नुम से निकलेगी जब वो जन्नत में दाख़िल हो जायेंगे तो (वहाँ) उन्हें जहन्नुमी के नाम से पुकारा जायेगा।
(बुख़ारी–सही–6/112-ह०–6566)
(अबू दाऊद–सुनन–4/597-ह०–4740)
(इब्ने माजा–सुनन–3/410-ह०–4315)
(अबू दाऊद–सुनन–6/597-ह०–4740)

हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया– कि रोज़े क़यामत अल्लाह तअ़ाला सब लोगों को जमा करेगा उस वक़्त लोग कहेंगे अगर हम अपने रब के हुजूर सिफ़ारिश ले जायें तो मुम्किन है कि हम इस हालत से निजात पा जायें चुनांचा वो हज़रत आदम (अ़लैहिस्सलाम) के पास जायेंगे और अ़र्ज़ करेंगे आप ही वो नबी हैं जिन्हें अल्लाह तअ़ाला ने अपने हाथ से तख़लीक़ किया और आपके अन्दर अपनी तरफ़ से रुह फूँकी फिर फ़रिश्तों को हुक्म दिया तो उन्होंने आपको सज्दा किया लिहाज़ा हमारे लिये आप अल्लाह तअ़ाला से सिफ़ारिश करें तो वो जवाब देंगे कि मैं तो इस लायक़ नहीं फिर वो अपनी लग़ज़िश का ज़िक्र करके कहेंगे कि तुम नूह अ़लैहिस्सलाम के पास जाओ वो पहले रसूल हैं जिन्हें अल्लाह तअ़ाला ने मबऊ़स फ़रमाया चुनांचा वो लोग हज़रत नूह (अ़लैहिस्सलाम) के पास जायेंगे तो वो भी यही जवाब देंगे कि मैं इस लायक़ नहीं हूँ तुम इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) के पास जाओ जिन्हें अल्लाह तअ़ाला ने

अपना ख़लील बनाया था तब लोग उनके पास जायेंगे तो वो भी यही कहेंगे कि मैं इस क़ाबिल नहीं हूँ वो अपनी एक ख़ता का ज़िक्र करके कहेंगे कि तुम मूसा (अ़लैहिस्सलाम) के पास चले जाओ उनसे अल्लाह तआ़ला हम कलाम हुआ था तब लोग मूसा (अ़लैहिस्सलाम) के पास जायेंगे तो वो भी यही कहेंगे मैं इस काबिल नहीं हूँ और वो अपनी एक लग़ज़िश का ज़िक्र करेंगे और कहेंगे कि तुम ईसा (अ़लैहिस्सलाम) के पास जाओ फिर लोग हज़रत ईसा (अ़लैहिस्सलाम) के पास जायेंगे तो वो भी यही कहेंगे कि मैं इस लायक़ नहीं हूँ तुम हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) के पास जाओ

चुनांचा वो लोग मेरे पास आयेंगे तो मैं अपने रब से इजाज़त तलब करूँगा फिर जब अपने रब को देखूँगा तो सज्दा रेज़ हो जाऊँगा फिर अल्लाह तआ़ला जितनी देर चाहेगा मुझे सज्दे में पड़ा रहने देगा फिर मुझसे कहा जायेगा ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) अपना सर सज्दे से उठाओ और माँगो तुम्हें दिया जायेगा गुफ़्तगू करो आपकी बात सुनी जायेगी आप सिफ़ारिश करें आपकी सिफ़ारिश कुबूल की जायेगी उस वक़्त मैं अपने रब की हम्दो सना करूँगा जिसकी अल्लाह तआ़ला ने मुझे तालीम दी होगी फिर मैं सिफ़ारिश करूँगा तो मेरे लिये एक हद मुक़र्रर कर दी जायेगी फिर मैं लोगों को जहन्नुम से निकाल कर जन्नत में दाख़िल करूँगा फिर मैं अल्लाह तबारक व तआ़ला के हुजूर जाऊँगा और सज्दे में गिर जाऊँगा दूसरी, तीसरी या चौथी बार उसी तरह सज्दे में गिर जाऊँगा हत्ता कि जहन्नुम में वही लोग रह जायेंगे जिन्हें कुरान ने रोक लिया होगा। हज़रत क़तादा फ़रमाते हैं कि इससे मुराद वो लोग हैं जिनका जहन्नुम में हमेशा रहना वाजिब होगा।

(बुख़ारी–सही–6/110-ह०–6565)

– हुज़ूर की सिफ़ारिश कबीरा गुनाह वालों के लिये –

हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरकारे दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने इरशाद फ़रमाया– कि मेरी सिफ़ारिश मेरी उ़म्मत के उन लोगों के लिये होगी जो कबीरा गुनाहों के मुरतकिब होंगे।
(अबू दाऊद–सुनन–4/596-ह०–4739)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/258-ह०–2435)

(गुनाहगारों को उम्मीद रखनी चाहिये कि उन की सिफ़ारिश होगी और उन्हें माफ़ कर दिया जायेगा मगर साथ ही शदीद ख़ौफ भी रखना चाहिये क्योंकि ये भी मालूम नहीं किस गुनाहगार की सिफ़ारिश होगी और कौन इससे महरुम होगा)

– हम्द का झण्डा हुजूर के हाथ में –

हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने इरशाद फ़रमाया– मैं रोज़े क़यामत (तमाम) औलादे आदम का क़ायद (सरदार) होऊँगा और मुझे (इस पर) फ़ख़्र नहीं और हम्द झण्डा मेरे हाथ में होगा और मुझे इस पर फ़ख़्र नहीं और हज़रत आदम (अ़लैहिस्सलाम) व तमाम अम्बिया किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) उस दिन मेरे झण्डे के नीचे होंगे और मुझे (इस पर) कोई फ़ख़्र नहीं और मैं वो शख़्स होऊँगा जिसके लिये सबसे पहले ज़मीन शक़ होगी और मुझे (इस पर) कोई फ़ख़्र नहीं आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया– लोग तीन बार ख़ौफ़ ज़दा होंगे फिर वो हज़रत आदम (अ़लैहिस्सलाम) की ख़िदमत में हाज़िर होकर शफ़ाअ़त की दरख़्वास्त करेंगे फिर दीगर अम्बिया

किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) के पास जाकर दरख़्वास्त करेंगे फिर बिल आख़िर लोग मेरे पास आयेंगे और मैं उनके साथ (उनकी शफ़ाअ़त के लिये) चलूँगा रावी कहते हैं कि हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु त़आला अ़न्हु) ने फ़रमाया गोया कि मैं अब भी हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) को देख रहा हूँ कि आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया- कि मैं जन्नत के दरवाज़े की जंजीर खटखटाऊँगा फिर पूछा जायेगा कौन जवाब दिया जायेगा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) चुनाँचा वो मुझे खुश आमदीद कहते हुये मेरे लिये दरवाज़ा खोलेंगे मैं (बारगाहे इलाही में) सज्दा रेज़ हो जाऊँगा तो अल्लाह तआ़ला मुझ पर अपनी हम्दो सना का कुछ हिस्सा इत्तलाअ़ फ़रमायेगा फिर मुझे कहा जायेगा सर उठायें माँगे अ़ता किया जायेगा शफ़ाअ़त कीजिये कुबूल की जायेगी और कहिये आपकी बात सुनी जायेगी आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया- यही वो मक़ामे महमूद है जिसके बारे में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया- यक़ीनन आपका रब आपको मक़ामे महमूद पर फ़ाइज़ फ़रमायेगा।
(सु०-बनी इसराईल-79)
(तिर्मिज़ी-सुनन-2/713-ह०-3148)
(इब्ने माजा-सुनन-3/406-ह०-4308)
(अहमद बिन हम्बल-अल मुस्नद-5/4-ह०-11000)
(इब्ने हिब्बान-सही-14/398-ह०-4678)

- अल्लाह तआ़ला हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) को मक़ामे महमूद पर फ़ाइज़ फ़रमायेगा -

हज़रत आदम बिन अ़ली से रिवायत है कि मैंने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) को फ़रमाते हुये सुना रोज़े क़यामत सब लोग गिरोह पर गिरोह हो जायेंगे हर उ़म्मत अपने-अपने नबी के पीछे होगी और (अपने नबी से) अ़र्ज़ करेगी ऐ फुलां शफ़ाअ़त फ़रमाइये

यहाँ तक कि शफ़ाअ़त की बात हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) पर आकर ख़त्म होगी पस उस रोज़ शफ़ाअ़त के लिये अल्लाह तआ़ाला आपको मकामे महमूद पर फ़ाइज़ फ़रमायेगा।
(सू०-बनी इसराईल-79)
(बुख़ारी-सही-4/646-ह०-4719)

- हुज़ूर को इख़्तियारे शफ़ाअ़त अ़ता हुई -

हज़रत औफ़ बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) एक तवील हदीस में बयान करते हैं हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने (एक सफ़र के दौरान) फ़रमाया- मेरे रब की तरफ़ से आने वाला (एक फ़रिश्ता) रात को मेरे पास आया तो उसने मुझसे मेरी आधी उ़म्मत को बग़ैर हिसाबो किताब के जन्नत में दाख़िल किये जाने और हक़्क़े शफ़ाअ़त दोनों में से एक को चुनने का इख़्तियार दिया तो मैंने शफ़ाअ़त को इख़्तियार कर लिया नीज़ फ़रमाया- बेशक़ मेरी शफ़ाअ़त मेरी उ़म्मत के हर उस फ़र्द के लिये होगी जो अल्लाह तआ़ाला के साथ किसी को शरीक न ठहराता हो।
(अहमद बिन हम्बल-अल मुस्नद-10/1054-ह०-24477)
(इब्ने हिबबान-सही-7/473-ह०-6470)
(तिर्मिज़ी-सही-2/260-ह०-2441)

- शफ़ाअ़त की फ़ेहरिस्त में जगह अ़ता करना -

हज़रत मुसइयब असलमी से रिवायत है कि हमारे एक गुलाम ने रहमते दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) की बारगाह में हाज़िर होकर अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) मैं आपकी बारगाह में सवाली बनकर हाज़िर हुआ हूँ आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया- क्या सवाल है उसने

अ़र्ज़ किया कि मुझे उन लोगों में शामिल फरमां लें जिनकी आप योमे क़यामत शफ़ाअ़त फ़रमायेंगे आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया- किसने तुम्हें ऐसा करने को कहा था किसने तुम्हारी इस बात की तरफ़ रहनुमाई की है उसने अ़र्ज़ किया कि सिर्फ मेरे दिल ने मुझे ऐसा करने का मशवरा दिया तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया- तू बेशक़ उन लोगों में से है जिनकी रोज़े क़यामत मैं शफ़ाअ़त करूँगा नीज़ आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया- तू अपने लिये कसरते सुजूद के ज़रिये मेरी मदद कर।
(तबरानी-मुअ़जम कबीर-20/365-ह०-851)
(मजमउज़्ज़वाइद-10/369)

- शफ़ाअ़त अम्बिया, शुहदा, व उल्मा -

हज़रत उस्मान बिन अ़फ़्फ़ान (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने इरशाद फ़रमाया-क़यामत के दिन तीन लोग शफाअ़त करेंगे-
(1) अम्बिया-किराम (2) शुहदाये-किराम (3) उल्माए-किराम।
(इब्ने माजा-सुनन-3/410-ह०-4313)

- हुजूर तमाम अम्बिया के सरदार होंगे -

हज़रत अ़बी बिन कअ़ब (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया- क़यामत के दिन मैं सारे अम्बिया का इमाम होऊँगा और उनका ख़तीब और उनकी शफ़ाअ़त करने वाला और मैं ये फख़्र के लिये नहीं कहता बल्कि हक़ तआ़ाला ने ये नेअ़मत मुझे अ़ता फ़रमाई उसको ज़ाहिर करता हूँ।
(इब्ने माजा-सुनन-3/410-ह०-4314)

तमाम रिवायात और कुरान व अहादीस के दलाइल से ये बात वाज़ेह तौर पर साबित हुई कि अपनी दुअ़ा व हाजात को बारगाहे इलाही में पेश करने और उसकी मक़बूलियत के लिये अम्बिया-किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) व औलिया-किराम (रहमतुल्लाहि तअ़ाला अ़लैहुम) और अल्लाह तअ़ाला के मुक़र्रब व मक़बूल बन्दों को वसीला बनाना वाजिब है और अल्लाह के मख़सूस बन्दों के वसीले के बग़ैर बारगाहे इलाही में कोई भी दुअ़ा शरफ़े मक़बूलियत नहीं पाती इन तमाम दलाइल के बाद अब शको शुबा की कोई गुन्जाइश नहीं रहती कि वसीला ज़रूरी नहीं फिर भी अगर कोई शख़्स ये कहे कि वसीला ज़रूरी नहीं और अल्लाह तबारक व तअ़ाला से बराहे रास्त अपनी हाजात का मुतालबा करो और बराहे रास्त अल्लाह से दुअ़ा करो और मांगों तो ऐसा कहने वाला शख़्स बेदीन और बद अ़कीदा और गुमराह है क्योंकि जो बात नसे कुरअ़ानी और अहादीस से साबित हो उसका इन्कार करना गोया कुरान व अहादीस का इन्कार है और ऐसा शख़्स खारिज़े अज़ इस्लाम है।

वल्लाहु तअ़ाला अ़ालम०

व आखिरूद्अ़वाना अ़निल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल अ़ालमीन०
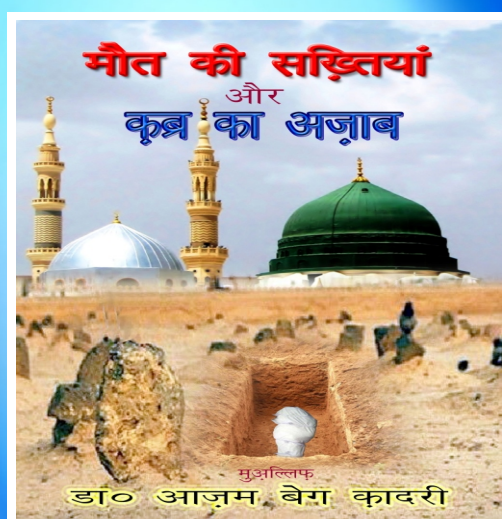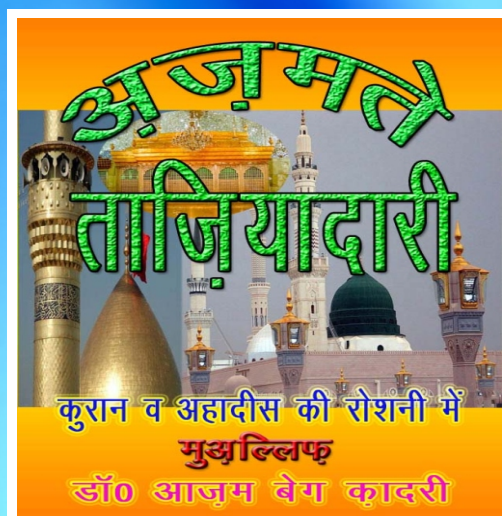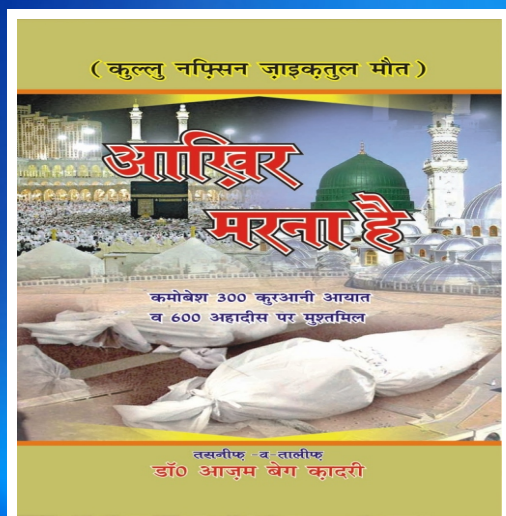
मदार बुक सेलर

मकनपुर (कानपुर) 09695661767